विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत **13 अक्टूबर 2020**

वर्ग पंचम **राजेश कुमार पाण्डेय**

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

द्वादशः पाठः

दुर्गापूजा

पूजायाः अन्तिमः दिवसः 'विजयादशमी' कथ्यते।

पूजा के अंतिम दिन को विजयादशमी कहा जाता है।

अपरे वदन्ति यत् अस्यां दशम्यां तिथौ देवी दुर्गा महिषासुरनामकं रक्षसं हतवती ।

लोगों के द्वारा बोले जाते हैं। दशमी के दिन ही मां दुर्गा ने राक्षस महिषासुर को मारी थी।

अतः सर्वत्र दुर्गायाः महिषमर्दिनी प्रतिमा प्रतिष्ठिता पूजिता च भवति।

इसलिए सभी जगह दुर्गा , महिषासुर मर्दिनी का प्रतिमा बनाकर और प्राण प्रतिष्ठा कर पूजा करते हैं।

देवीप्रतिमाः पुजा स्थलानि च उत्तम रीत्या सज्जितानि भवन्ति।

देवी प्रतिमा का पूजा का स्थल रिति- रिवाज और सुसज्जित ढंग से किया जाता है।

जनाः दुर्गायाः स्तूति **पठन्ति हवनं कुर्वन्ति च।**

लोगों के द्वारा दुर्गा का स्तुति और हवन किया जाता है ।

बहुषु स्थलेषु संगीतनृत्यादयाः मनोरञ्जकाः कार्यक्रमा आयोजिताः भवन्ति।

बहुत जगह इस अवसर पर संगीत नृत्य आदि का मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित होता है।

जनाः नूतनानि वस्त्राणि धारयन्ति।

लोग नए वस्त्र धारण करते हैं।

विविधान् मधुराणि खादन्ति खादन्ति च।

विभिन्न प्रकार के मीठे मिठाइयां खाते हैं।

दशम्यामेव दुर्गायाः प्रतिमाः जले विसर्जितां भवन्ति।

दशमी तिथि को दुर्गा के प्रतिमा का जल में विसर्जन होते हैं।